चित्र ऐसा हो कि बोल उठे

दिलीप चिंचालकर

हर चित्र एक कहानी कहता है। ऐसा कहते हैं कि एक तस्वीर एक हज़ार शब्दों के बराबर होती है। हज़ार तो बहुत हुए। चलो, सौ शब्दों बराबर हुई तो भी उसे बातूनी कहेंगे। गाय और घास के किस्से वाले चित्र के बारे में तुम्हें पता ही होगा। एक बच्चे ने इन दोनों का चित्र बनाया। चित्र के नाम पर एक अच्छे-भले कागज़ पर हरे रंग का कुछ छितर-फितर था। जब पूछा कि यह क्या है तो उत्तर मिला कि गाय और घास का चित्र है। घास कहाँ है? गाय घास खा गई! फिर गाय कहाँ है? पता चला वह घास खाकर आगे बढ़ गई! यानी ज़रा से छितर-फितर की भी खासी कहानी थी।

और फिर तुम्हारी कल्पनाएँ तो इतनी तेज़ दौड़ती हैं कि उनका चित्र अधूरा रह जाता है लेकिन उसके पीछे की कहानी खत्म ही नहीं होती। बड़ों के चित्र पूरे होते हैं (ऐसा वे सोचते हैं) और कहानियाँ कहीं खो जाती हैं। आजकल चलन तो ऐसा है बड़े कुछ भी चित्र बना डालते हैं और समीक्षा लिखने वाले उनकी कहानियाँ गढ़ते हैं। इन आधे-दूधे चित्रों के फेर में पड़कर बड़े होते नन्हें चित्रकार भी अपनी कल्पना की उड़ान नहीं भर पाते। तो बच्चों को बड़े चित्रकारों से सहमकर काम करने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। चित्रकारी का अर्थ ही है अपने मन की बातों को पंख लगाना। हूबहू चित्र उतारने का काम एक कैमरा ज़्यादा अच्छे से कर लेता है।

नीचे की एक तस्वीर में चित्रकार मार्क छगाल के जन्मदिन पर उसकी मंगेतर बेला केक और गुलदस्ता लेकर आई तो वह इतना खुश हुआ कि नाचने लगा। सहेली के साथ गोल-गोल घूमने लगा। फिर वे दोनों हवा में तैरते हुए खिड़की से बाहर हो गए। खेत-जंगलों और गिरजाघरों के ऊपर उड़ते फिरे। यह उन्हीं का चित्र है। इस पर कुछ लोगों ने ज़रूर मुँह बिचकाया होगा। लेकिन मार्क को चित्र बनाने में आनन्द मिला और देखने वालों को मज़ा आया। तो चित्र ऐसे हों।

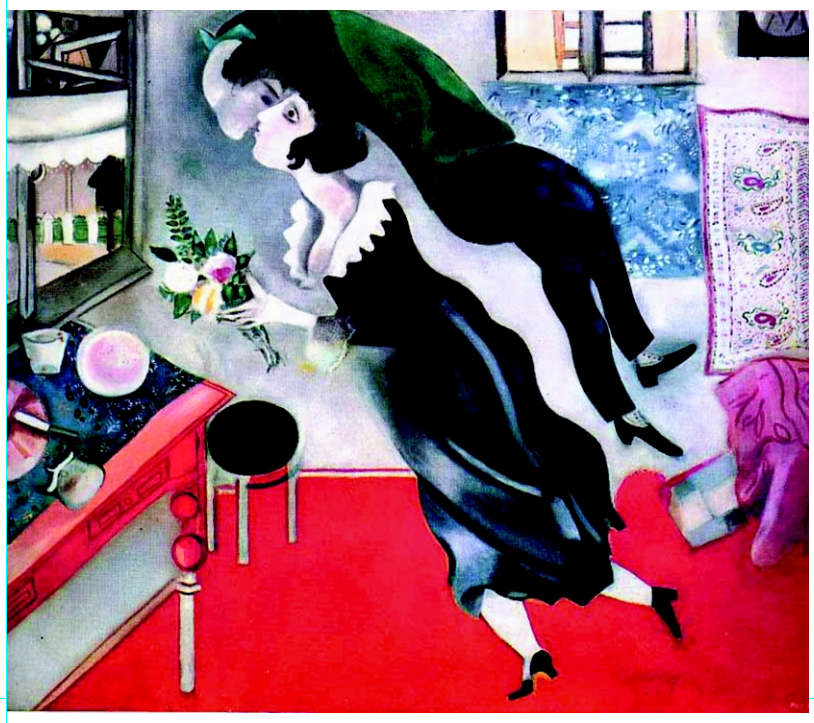

पिछले अंक में इन्हीं पन्नों पर हमने पर्स्पेक्टिव की बात की थी। कैमरे और चित्रकार के पर्स्पेक्टिव (दूर और पास की वस्तुओं को सिलसिलेवार देखने) में फर्क है। कैमरा टेक्नोलॉजी का दास है। चित्रकार मन का राजा है। उसकी आकृतियाँ फुटरूल और कपास के घेरे में बँधी नहीं रहती। चित्रकार की सीधी रेखा ऊँचे पेड़ों को फलाँग कर भी सीधी ही रहती है। वह दीवार के एक और खड़े होकर इधर का देख सकता है और दीवार के उधर का भी। और महल के पीछे के जंगलों को भी।

यही तो चित्र बनाने का मज़ा है।